

VIDYA BHAWAN BALIKA VIDYA PITH

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय बिहार

class 12 commerce Sub. ECO/ B Date 31.5.2020

Teacher name – Ajay Kumar Sharma

INDIAN ECONOMY 1950–1990

Question 11:

What is sectoral composition of an economy? Is it necessary that the service sector should contribute maximum to GDP of an economy? Comment.

ANSWER:

The sectoral composition of an economy is the contribution of different sectors to total GDP of an economy during a year. That is, the share of agricultural sector, industrial sector and service sector in GDP.

Yes, it is necessary that at the later stages of development, service sector should contribute the maximum to the total GDP. This phenomenon is called Structural Transformation. This implies that gradually the country's dependence on the agricultural sector will shift from the maximum to minimum and, at the same time, the share of industrial and service sector in the total GDP will increase. This structural transformation together with the economic growth is termed as economic development.

एक अर्थव्यवस्था की क्षेत्रीय संरचना एक वर्ष के दौरान अर्थव्यवस्था की कुल जीडीपी में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान है। यानी जीडीपी में कृषि क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र और सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी।

हां, यह आवश्यक है कि विकास के बाद के चरणों में, सेवा क्षेत्र को कुल जीडीपी में अधिकतम योगदान देना चाहिए। इस घटना को संरचनात्मक परिवर्तन कहा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि धीरे-धीरे कृषि क्षेत्र पर देश की निर्भरता अधिकतम से न्यूनतम और, उसी समय, कुल जीडीपी में औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ जाएगी। आर्थिक विकास के साथ एक साथ इस संरचनात्मक परिवर्तन को आर्थिक विकास कहा जाता है।

Question 12:

Why was public sector given a leading role in industrial development during the planning period?

ANSWER:

At the time of independence, Indian economic conditions were very poor and weak. There were neither sufficient foreign reserve nor did India have international investment credibility. In the facet of such poor economic condition it was only the public sectors that need to take the initiative. The following are the reason that explains the driving role of the public sector in the industrial development:

1. Need of Heavy Investment: There was a need of heavy investment for industrial development. It was very difficult for the private sector to invest such a big amount. Further, the risks involved in these projects were also very high and also these projects had long gestation period. Thus, the government played the leading role to provide the basic framework of heavy industries.

2. Low Level of Demand: At the time of independence, the majority of population was poor and had low level of income. Consequently, there was low level of demand and so there was no impetus for any private sector to undertake investment in order to fulfill these demands. Thus, India was trapped into a vicious circle of low demand. The only way to encourage demand was by public sector investments. स्वतंत्रता के समय, भारतीय आर्थिक स्थिति बहुत खराब और कमजोर थी। न तो पर्याप्त विदेशी रिजर्व थे और न ही भारत में अंतरराष्ट्रीय निवेश की विश्वसनीयता थी। ऐसी खराब आर्थिक स्थिति के पहलू में यह केवल सार्वजनिक क्षेत्रों की पहल करने की जरूरत थी। निम्नलिखित कारण हैं जो औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र की ड्राइविंग भूमिका की व्याख्या करते हैं:

1. भारी निवेश की आवश्यकता: औद्योगिक विकास के लिए भारी निवेश की आवश्यकता थी। निजी क्षेत्र के लिए इतनी बड़ी राशि का निवेश करना बहुत मुश्किल था। इसके अलावा, इन परियोजनाओं में जोखिम भी बहुत अधिक थे और इन परियोजनाओं में लंबी अवधि की अवधि भी थी। इस प्रकार, सरकार ने भारी उद्योगों के बुनियादी ढांचे को प्रदान करने में अग्रणी भूमिका निभाई।

2. निम्न स्तर की मांग: आजादी के समय, अधिकांश आबादी गरीब थी और उनकी आय का निम्न स्तर था। नतीजतन, मांग का स्तर कम था और इसलिए इन मांगों को पूरा करने के लिए किसी भी निजी क्षेत्र में निवेश करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था। इस प्रकार, भारत कम मांग के एक दुष्चक्र में फंस गया था। सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश से मांग को प्रोत्साहित करने का एकमात्र तरीका था।